ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 201-202

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

कृष्णा रेड्डी एक संक्षिप्त परिचय

1. शबाहत
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-04.12.2023, Revised-10.12.2023, Accepted-15.12.2023 E-mail: ansarishabahat@gmail.com

सारांशः ***आधुनिक भारतीय युग में कला के क्षेत्र में छापा चित्रकला का अत्यधिक महत्व है। छापा कला में प्राचीन काल से ही कार्य होता आया है। भारत में भी प्राचीन काल से ही कार्य हो रहा है। भारतीय प्रागैतिहासिक छापा कला वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ में चौसठ कलाओं की सूची में चित्रकला को चौथा स्थान दिया। प्रागैतिहासिक संस्कृति नर्मदाए चम्बल, यमुना और सिंधु की संस्कृति थी। उस युग की रेखा कृतियॉ काष्ठ तथा शिलाओं पर पशु एपंक्षी एवं मानव आकृतियों के चित्रण के रूप में मिलती है। आदि मानव के सौन्दर्य की उत्कट भावना ने ही उसके अमूर्त भाव को मूर्त लिपि में अंकित करने के लिये उसे बाध्य किया। अभिव्यक्तियों में सरहाट में शिला पर लाल मिट्टी के रंग से चित्रित तीन अश्व उल्लेखनीय है।मालवा चित्रांकित में ऐसी गाडी मिली है। जिस पर पहिये नहीं हैं, और जिसमें एक व्यक्ति बैठा हुआ था उसके दोनों ओर दो अनुचर धनुष बाण तथा दण्ड लिये हुए हैं। करियाकुण्ड में एक ऐसा प्रागैतिहासिक चित्र मिला है, जिसमें एक बारहसिंहा और अनेक धनुधारि व्यक्ति उसका पीछा करते हुए दर्शायें गयें हैं। इस विषय की सबसे सुंदर और उल्लेखनीय चित्र सामग्री पंचवटी से प्राप्त हुई हैं। ये चित्र वहॉ के प्रसिद्व महादेव पर्वत के चारों ओर आवस्थित डोरे के द्वीप, महादेव बाजार, सोनभर्द जम्बूद्वीप, निम्बूभोज,मारोदेव, बनियाबेरी, तामिया और झलाई आदि स्थान की चित्रित गुफाओं से प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार के कुछ भितिचित्र होशंगाबाद के निकट आदमगढ़ नामक स्थान भी मिले हैं।***

कुंजीभूत शब्द– आधुनिक भारतीय युग, छापा चित्रकला, प्रागैतिहासिक छापा कला, वात्स्यायन, प्रागैतिहासिक संस्कृति, शिलाओं।

भारत में छापा कला के इतिहासको जानने के लिये हम देखते हैं कि भारत में चित्रकला का जन्म कब और कैसे हुआ वैसे यह एक अत्यन्त विवाद स्पष्ट प्रश्न है। किन्तु प्रागैतिहासिक मानव ने किस प्रकार अपनी संस्क्रति एवं सभ्यता और भाव, विचारों का विकास किया ा सौभाग्यवश इसके बहुत से तथ्य आज प्रकाश में आ चुके हैं। भारत के प्रागैतिहासिक आलेखनों एवं चित्रों का अनुशीलन करने वाले विद्वानों में एलन हॉल व ब्रार्डिक, स्टूअर्ट पिगाटएडीण्, चण् गोर्डन, प्रो. जुनेर, लियोनार्ड एड्म, एफण् आरण् आल्विन तथा श्रीमती आल्विन सीण्एण्सिल्वे लाड, पंचानन मित्र और मनोरंजन धोप का नाम प्रमुख हैं। बार्डिक की पुस्तक प्रि हिस्टोरिक पेंटिग और पिगाट की पुस्तक प्रि हिस्टोरिया इंडिया इस विषय की प्रमाणिक सामग्री से पूर्ण हैं। ब्रार्डिक महोदय ने संसार के प्रागैतिहासिक चित्रों की प्राचीनता का विश्लेषण करते हुए भारत में उपलब्ध चित्रों को अमेरिका और यूरोप के बाद रखा है। ये चित्र मध्य प्रदेश के आदमगढ रामगढय बिहार के चक्रधरपुर सिहंन, होशांगाबाद और मिजीपुर के लिखुनियॉ कोहर तथा भल्डरिया आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। श्रीमती आल्विन ने ऋष्यमूक पर्वत के निकट से प्राप्त चित्रों का समय 3000 ईण् पूर्व निर्धारित किया है। इसी प्रकार चकृधरपुर से प्राप्त गुफाचित्रों को असित कुमार हल्दर ने 3000 ई0 पूर्व का बताया है।

छापा चित्रण का संबंध खोदने अथवा उत्कीर्णन से जुडा है और मानव द्वारा यह पहला कार्य शिला पर ही किया गया है। उदाहरणार्थ सन 1863 ई0 में चेन्नई के पास पूर्व पाषाण काल का एक शिलाखण्ड है। इसके अलावा सन 1980 ई0 में मिजीपुर में पंख पोषाण युक्त अनेक चित्रखुदी चट्टानें मिलीं, जो कि प्रागैतिहासिक महत्व को बताती है। मध्य प्रदेश के सिंघनपुर तथा सर गुजा रियासत के जोगीमारा आदि स्थानों से चित्रित प्राचीन महत्वपूर्ण अनेक चट्टानें प्राप्त हुई है। इन चट्टानों पर लाल पीले रंग से रेंगते कीडें एवं पशुओं, पक्षियों, मनुष्यों और असुरों की आकृतियॉ चित्रित हैं।

भारतीय पुरातत्व के क्षेत्र में जितने भी कार्य हुए हैं और जितने भी प्रागैतिहासिक स्थानों का पता चलता है। उनमें हडप्पा की सभ्यता का महत्वपूर्ण स्थान है। तीन हजार वर्ष प्राचीन हडप्पा सभ्यता म ंबने मृति का पात्रों के उपर जो रेखांकन किया गया वह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्राचीन काल में मनुष्य धातु से अनजान था वह केवल पत्थरों के शस्त्रों से काम चलाता था। मिर्जापुर यकोहबरद्ध की गुफा की छत में तथा कंडाकोट पहाड़ के समीपवर्ती मार्ग में स्थित अनेक शस्त्र शिलाओं पर क्षेपांकन विधि से अंकित गेरूऐं रंग के ऐसे अनेक हस्त चिन्ह प्राप्त हुए हैं, जिन्हें हम भारतीय छापा कला के प्रारम्भिक छापा चित्र मान सकते हैं। कहीं अकेले हाथ की छाप मिलती है तो कही दोनों हाथों की छाप मिलती है। 4000.3000 ईण् पूर्व के चीन एमध्य एशिया और भारत में जिस नवीन सभ्यता का निर्माण इतिहासकारों ने उसको मृतपात्रों का नाम दिया हैं। इन भू भागों के सम्पूर्ण मानव की आकृतियॉ अंकित हैं। भारत में इस प्रकार पकाई हुई अलंकृत मिट्टी के बर्तन, नाल, सूकर इत्यादि मोहनजोदडो, हडप्पाएलोथल आदि स्थानों की खुदाई में उपलब्ध हुए हैं। ये कृतियॉ कुछ तो रेखाकार एकोषाकार एवं वृताकार हैं और कुछ में फुलों एपतियों तथा पशु पक्षियों के चित्र अंकित हैं। मोहनजोदडा में कुछ मिट्टी की रंगी हुई मूर्तियां भी उपलब्ध हैं जिनकों देखने से तत्कालीन चित्रकला की ओर भी पुष्टि होती है।

वर्ण या रंग के धोल द्वारा चित्र–रचना की बहुप्रचलित एवं सुपरिचित परम्परागत विधि के अतिरिक्त प्राचीन काल में छापा चित्रण से संबंधित कुछ अन्य चित्रण विधियॉ भी प्रचलित थी। जिनका प्रयोग भारतीय शिला चित्रों में मिलता है, किन्तु उनके लिये कोई उपयुक्त नाम प्रयोग में आते रहे हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में प्रयुक्त शब्दों से उन्हें अभिहित किया जा सकता है। यथा उत्कीर्ण, चित्रएकर्षण, चित्र, तक्षण, चित्र, किन्तु इन अभिधानों से व्यक्त होने वाले अभिप्राय की प्रकृति की निर्धारित करना कुछ कठिन दिखाई देता है, क्योंकि जिन चित्रों को फासेट ने ओरियन्टल रिर्स्च सोसाइटी की पत्रिका में कहा है। द इंडियन ऐण्टीक्वेरी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

में कार्विंग्स कहा है। प्राचीन भारतीय इतिहास में कई प्रकार के प्रमाण मिलते हैं। मोहरें पर चित्रण हुआ मिलता है और लिपि का विकास हुआ। लोथलनामक स्थान से सुलेमानी, संगजीरा, मुलायम पत्थर की भी मोहरें मिलती हैं। जिनमें चित्र एवं सोंगदार अश्रय युनिकार्न चित्रित मिलता है। समय के साथ विभिन्न प्रकार से विकास हुआ। पाण्डुलिपि चित्रण बाद में कागज का प्रयोग ताडपत्रों में चित्रण एशिला एवं धातु उत्कीर्ण वस्त्र छापांकन यांत्रिक काष्ठमुद्रण रेखा अम्लांकन इत्यादि। समय के साथ साथ इन शैलीयों में विस्तार एवं विकास आता चला गया। प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में छापा कला में नवीन प्रयोग होते चले गये। जिससे भारतीय कला में अनेकों कलाक्रतियॉ उपलब्ध होती हैं। परम्परागत विधियों की निरन्तरता चलती रही। आधुनिक भारत में गगनेन्द्रनाथ टैगोरए मुकुल डे, रमेन्द्रनाथ, चक्रवर्ती और मनीन्द्रनाथ भूषण का काम कर रहे थे। विनोद बिहारी मुखर्जी तथा रामकिंकर बैज ने छापा कला में कार्य किया। आधुनिक भारत में विभिन्न तकनीक में कार्य किया गया। आधुनिक छापा कला कई चरणों से होकर अपने अस्तित्व में आई है। स्वतन्त्र भारतीय छापा कला के विकास के तीन चरण रहें हैं। पहला चरण 1954–1964 तक अत्यधिक विशिष्ट चरण जिसे दिल्ली में केवल कृष्ण ने प्रारम्भ किया था। यह चरण छापा कला में पथ प्रदर्शक सर्वाधिक उतेजक था। उस समय जब यह कला एक नया क्षेत्र था। इसमें छापाकारों का समर्पण रहा। इसके बाद में चरण परस्परव्यापी है। यह 1960–1970 जोकि मध्य और शैक्षिक काल है। सन 1950 को भारतीय कला में उतेजना और पुनरू सामंजस्य का काल माना जाता है। आधुनिक भारतीय चित्रण प्राप्त करने को कुछ निश्चित प्रकियायें है, जोकि अति साधारण तकनीक से लेकर कलाकार रचित रचना जैसी ही नकल के माध्यम तक फैली है। छापा चित्रकला विकास में कई भारतीय चित्रकारों का विशेष योगदान रहा है। इसमें विशेष कर ज्योती भटट्र, लक्ष्मी गौड, कृष्णा रेडी व सोमनाथ होर आदि का योगदान प्रशंसनीय है। इन सभी चित्रकारों के विशेष योगदान से छापा चित्रकला को नया विकसित रूप प्राप्त हुआ। उनके द्वारा निर्मित सुन्दर चित्रणों पर प्रकाश डालना चाहूॅगी। कृष्णा रेड्डी का जन्म 1925 में आन्ध्र प्रदेश में हुआ था। उनकी शिध्क्षा शांति निकेतन, स्लेड स्कूल ऑफ फाईन आर्टस यलन्दनद्धमें एतेलिए.17 पेरिस और कुछ पश्चिमी कलाकारों के स्टूडियो में रहकर कृष्णा रेड्डी ने सीखा और समझा। सन 1951 से 1952 तक कला क्षेत्र मद्रास में विभागाध्यक्ष के पद पर भी रहे। जादकिन ने कृष्णा रेड्डी को पहचान कर उन्हें एतेलिए– 17 कार्यशाला में हैदर से छापाचित्र कला का प्रशिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी। मीरोए मार्क्स, अन्सर्ट, मैसो आदि अनेक महत्वपूर्ण यथार्थवादी कलाकारों का संबंध इस कार्यशाला से रहा है। दक्षिण भारत के ग्रमीण इलाकों में धार्मिक विचारों वाली मां के साथ–साथ घूमने से उन्होने दैनिक जीवन में कला के स्थान को समझा। अल्पायु में उन्होंने पत्थर और मिट्टी के मेल से अपने रंग बनाने आरम्भ कर दिये थे। फिर शांति निकेतन में सात वर्ष रहकर उन्होंने आचार्य नन्दलाल बोस से सीखा कि पेड़ सिर्फ बनाया ही न जाये बल्कि उसकी सतह के समान अन्दर तक जाया जाये। भीतरी ऑख को जगाकर पेड को पूरी तरह देखा जाये। इस वातावरण से कृष्णा रेड्डी 1950 में हेनरी नूर लन्दन के पास पहुॅचे। वहॉ से रूस के मूर्ति शिल्पी जादक ने पेरिस एजादकिन जियो को मेन्ती, बाकुंसी और मारीनी जैसे महान कलाकार अथवा आधुनिक मूर्ति शिल्पियों के सम्पर्क में आये और उन्होंने अपनी और पश्चिमी सभ्यताको नये तरीकें से समझा। कृष्णा रेड्डी अपनी शिक्षा ग्रहण करते समय जादकिन की सलह पर सन् 1953 में कृष्णा रेड्डी पेरिस में एतेलिए– 17 में आ जुडे। विलियम हैदर से ग्रफिक कला प्रशिक्षण प्रारंभ किया। 70 के दशक तक वह यही रहे। कृष्णा रेड्डी एक मूर्तिशिष्यी थे और उन्होंने धातु पर भी वैसे ही सामर्थ्य लगाना शुरू की जैसे मूर्तिशिष्यी अपनी सामग्री पर लगाता है। कृष्णा रेड्डी ने छापों के संसार को समझने के लिये तीन तरह के चित्रों की चर्चा जरूरी है। यह संसार काव्यात्मक है। पानीए लहरए छपाकए बच्चे, मछली, सर्कस के जोकर आदि विभिन्न काव्यात्मक और मार्मिक अनुभवों से कृष्णा रेड्डी ने अम्ल की ताकत को महसूस किया। इस प्रकिया में केवल एक प्लेट से कई रंगों का छापा प्राप्त किया जाता है। प्लेट पर इसे अम्लांकन किया जाता है कि उसमें विभिन्न स्तर की उॅचाई गहराई पैदा हो जाती है। तत्पश्चात् विभिन्न नर्मी के रोलर द्वारा अलग अलग रंगों को प्लेट पर लगाया जाता है। सबसे नर्म रोलर को सबसे नीचे सतह तक स्याही लगाने के लिये तथा उपरी सतह के लिये कठोर रोलर का प्रयोग किया जाता है। प्लेट को प्रैस द्वारा एक ही बार दबाव देते हुए नए पेपर पर रंगीन छापा बनाया जाता है। वर्तमान में विकसित छपाई की इस अन्तराष्ट्रीय तकनीक के विकास में इन कृष्णा रेड्डी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अम्ल के साथ कृष्णा रेड्डी खेलते थे ऐसा कहा जाता है कि कृष्णा रेड्डी ने बहुत समय तक हाथों के पारम्परिक औजारों का इस्तेमाल किया मशीनी औजारों का इस्तेमाल उन्होंने बाद में किया। आपने एक कला तकनीक का विकास किया। जिसे विस्कोसिटी के नाम से जाना जाता है। इस प्रकिया से वह एक ही प्लेट पर विभिन्न रंग से कार्य किया जाता है। बार–बार अलग रंग से एक ही चित्र में विभिन्न रंग आ जाते हैं। कृष्णा रेड्डी कहते थे, मुझे मूर्तिकार से ज्यादा छापा चित्रकला कहलवाना अच्छा लगता है। कृष्णा रेड्डी ने रंगों का एक संसार पा लिया है, जैसे चित्र को छूने की इच्छा होती है। वैसे ही कृष्णा रेड्डी के छापा चित्रों को छूने की इच्छा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, सुनील, भारतीय छापा चित्रकला, भारतीय कला प्रकाशन, 2000.
2. अग्रवाल एडाण् गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला संजय पब्लिकेशन आगरा, 2005.
3. मागो, प्राण नाथ, भारत की समकालीन कला एक प्ररिप्रेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 2006.
4. भारद्वाज, विनोद– समकालीन भारतीय कला एक अन्तरंग अध्ययन, प्रथम संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्लीए 1982.
5. दैनिक भास्कर– समाचार पत्र, अगस्त 24, 2015.
6. प्रदीप किरण भारतीय आधुनिक कला, कृष्णा प्रकाशन मीडिया, प्रा. लि. शिवाजी रोड, मेरठ।

*****